IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में कृषि नीतियों का विकास (1947-2000) ई०

1Aman Singh, 2Dr. Sanobar Haider

1Research Scholar, 2Assistant Professor

1Lucknow University,

2Govt. Degree College Kuchlai, Sitapur UP

सारांश (Abstract):-

स्वतंत्रता के प्रारंभिक वर्षों में भारत में खाद्यान्न की कमी थी। गरीबी, सामंती भूमि व्यवस्था, सिंचाई एवं तकनीकी पिछड़ापन के कारण कृषि में प्रगति रुकी हुई थी। इन चुनौतियों के समाधान के लिए सरकार ने भूमि सुधार, सिंचाई परियोजना, बुनियादी ढांचे का निर्माण, पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि को प्राथमिकता देखकर कृषि विकास के लिए नीतियों का निर्माण किया। 1965 से 1980 तक का काल भारत में हरित क्रांति का काल था इसमें सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य, सस्ते कृषि ऋण, उर्वरक, कीटनाशक उत्पादन एवं कृषि निर्यात नीतियां बनाई जिससे भारत खाद्यान्न आयातक से निर्यातक बन गया। 1980 के दशक में भारत दलहन एवं तिलहन फसलों को छोड़कर खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बन चुका था। 1980 से 1990 तक तिलहन ,दलहन, डेयरी ,बागवानी इत्यादि में उत्पादन बढ़ाने के लिए कृषि नीतियां बनाई गई। वैश्वीकरण के बाद 1995 में विश्व व्यापार संगठन (WTO) से समझौता होने के बाद भारत को अपनी कृषि नीति में समझौते के अनुसार बदलाव करना पड़ा हैं। भारत की जीडीपी में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं तथा किसानों के लिए रोजगार का जरिया भी कृषि है। कृषि नीतियों के कारण किसान प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होते हैं।

मुख्य शब्द (Keyword):-

भूमि सुधार, कृषि नीति, हरित क्रांति, वैश्वीकरण, पंचवर्षीय योजना, न्यूनतम समर्थन मूल्य(MSP), विश्व व्यापार संगठन(WTO)

शोध पद्धति एवं साहित्य समीक्षा:-

इस शोध पत्र में प्राथमिक स्रोत के रूप में पंचवर्षीय योजनाओं के दस्तावेज और द्वितीय स्रोत के रूप में प्रस्तुत शोध से संबंधित किताबों और लेखों का उपयोग किया गया है। सरकारी रूप से अधिकृत वेबसाइट जैसे PIB का भी उपयोग किया गया है। पंचवर्षीय योजनाओं के दस्तावेज के अध्ययन करने से पता चलता है कि उस समय कृषि की स्थिति क्या थी और उसके लिए कौन सी नीतियों की आवश्यकता थी। जनगणना रिपोर्ट और आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट से भी कृषि की परिस्थितियों और चल रही योजनाओं की जानकारी प्राप्त हुई है। द्वितीय स्रोत (जैसा की संदर्भ सूची में वर्णित) के अध्ययन से कृषि के विकास के लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा पारित की जाने वाली कृषि नीतियों के विषय में जानकारी प्राप्त हुई है। नीतियों के विश्लेषण के लिए भारत से और विदेशों से प्रकाशित होने वाले शोध पत्र का भी उपयोग किया गया है जिससे वस्तुनिष्ठता बनी रहे क्योंकि केवल सरकारी स्रोतों के उपयोग से नीतियों के नकारात्मक स्वरूप का पता नहीं चलता है।

परिचय (Introduction):-

औपनिवेशिक काल में अंग्रेजों ने अपने आर्थिक लाभ को ध्यान में रखते हुए कृषि नीतियों का निर्माण किया था। कृषि के व्यवसायीकरण से खाद्यान्न के स्थान पर कपास, जूट, नील, चाय, इत्यादि नगदी फसलों ने ले लिया एवं शोषणकारी राजस्व प्रणाली ने किसानों को लगान देने के लिए अपने संचित अनाज को भी बेचने पर मजबूर कर दिया।[1] यद्यपि ब्रिटिश काल में सिंचाई की आधुनिक तकनीक का विकास हुआ परंतु वह भी व्यापारिक फसलों तक सीमित रहा औपनिवेशिक कृषि नीतियों ने ही कृषक विद्रोह को जन्म दिया था। आजादी के बाद भारत में खाद्यान्न की कमी थी जिसे भारत सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया। हरित क्रांति के बाद भारत न केवल खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बना बल्कि अन्य देशों को निर्यात भी करना प्रारंभ कर दिया।[2] 2022-23 में कृषि उत्पाद निर्यात नीति में बदलाव करते हुए चावल व प्याज इत्यादि पर घरेलू आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर निर्यात प्रतिबंध लगाया गया है।[3]

प्रस्तुत शोध पत्र में 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से जुलाई 2000 में घोषित प्रथम राष्ट्रीय कृषि नीति(National Agriculture Policy) तक के कृषि नीतियों के विकास का अध्ययन किया गया है।

खाद्यान्न संकट के काल में कृषि नीतियों का विकास (1947-1965)ई.-

ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में भारतीय कृषि पर पर्याप्त ध्यान न देने के कारण आजादी के बाद भारत में खाद्यान्न संकट उत्पन्न हो गया। 1951 में भारत के सभी भागों से लगभग 43 लाख टन खाद्यान्न सरकार ने खरीदा एवं 34.8 लाख टन वार्षिक खाद्यान्न विदेश से आयात करना पड़ता था। भारत में प्रतिवर्ष 77.11 टन खाद्यान्न

---

[1] बंद्योपाध्याय, एस. (2015). पलासी से विभाजन तक और उसके बाद: आधुनिक भारत का इतिहास

[2] Prabha, P., Kumar, B., Goyal, S. K., Goyal, R. K., & Singh, S. R. (2015). Indian agriculture and rural development under five year plans: An appraisal. Agriways, 3(1), 41–47. Research and Education Development Society (REDS).

[3] Organisation for Economic Co-operation and Development (OECD). (2024). Agricultural policy monitoring and evaluation 2024: India. OECD Publishing. https://data-explorer.oecd.org/

का सरकारी भंडार से आवंटित होता था जिसका राशन की दुकान एवं अन्य वितरण कार्यों में उपयोग होता था। इस समय काल में तीन पंचवर्षीय योजनाओं का संचालन किया गया।

पहली पंचवर्षीय योजना में कृषि उत्पादन बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया जिसके लिए आधारभूत संरचना सिंचाई बिजली यातायात के साधन की व्यवस्था में सुधार किया गया। जमींदारी उन्मूलन कानून एवं सामुदायिक विकास योजनाओं को लागू किया गया। इसी योजना में मेट्टूर बांध, हीराकुंड बांध एवं भाखड़ा नांगल बांध का निर्माण किया गया।

दूसरी पंचवर्षीय योजना में गहन कृषि जिला कार्यक्रम(IADP) 1962, लागू किया गया। इससे खाद, बीज एवं रासायनिक दवाइयां की आपूर्ति सुनिश्चित किया गया। बड़े स्तर पर पन-बिजली परियोजनाओं (Hydroelectric Power Project) से बिजली उत्पादन बढ़ा जो कृषि के लिए आवश्यक था।

तीसरी पंचवर्षीय योजना में खाद्यान्न उत्पादन में 30% की वृद्धि का लक्ष्य रखा गया था परंतु सूखे, 1962 में भारत-चीन युद्ध एवं 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के कारण लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकी। भारत को 1100 करोड़ के खाद्यान्न को आयात करना पड़ा। इस प्रकार से 1947 से 1965 तक का समय भारत में खाद्यान्न संकट का समय था, जिसमें भारत के विदेशी मुद्रा का ज्यादातर भाग खाद्यान्न आयात में खर्च हो जाता था। भारत के साथ चीन व पाकिस्तान के युद्ध के कारण भी कृषि नीतियों को ठीक से लागू नहीं किया गया। हालांकि इस समय काल में किए गए कार्य जैसे सिंचाई, यातायात, कृषि संस्थान इत्यादि की व्यवस्था ने आने वाले समय के हरित क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

हरित क्रांति के काल में कृषि नीति (1965-1980)ई०:-

तीन पंचवर्षीय योजनाओं के संचालन के बाद भी भारत खाद्यान्न के लिए USA के पीएल-480 समझौते पर निर्भर था। PL-480 के तहत अमेरिका अपने अधिशेष उत्पादन को विकासशील देशों को उपलब्ध करवाता था। अमेरिका ने इसका भू-राजनीतिक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया और नीतिगत मामलों में भारत पर दबाव बनाया। विदेशी दबाव ने भारत को हरित क्रांति के लिए प्रेरित किया। हरित क्रांति के लिए मैक्सिकन गेहूं, IR-8 धान की प्रजाति प्रयोग में लाई गई। रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशक कारखाने के लिए विदेशी कंपनियों को भारत में निर्माण की अनुमति प्रदान की गई। कृषि में प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने योजनाओं के माध्यम से गांव में बिजली की व्यवस्था की। कृषि यंत्रों पर सब्सिडी देकर यंत्रीकरण को बढ़ावा दिया गया एवं साथ में कृषि उत्पादों का उचित मूल्य किसानों को मिल सके इसके लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) घोषित किया गया जिससे किसान निश्चिंत होकर खाद्यान्न उत्पादन कर सके। अनाज खरीद भंडारण एवं वितरण के लिए 1965 में भारतीय खाद्य निगम (FCI) की स्थापना की गई। कृषि लागत एवं मूल्य आयोग (CACP) का गठन कृषि उत्पादों के मूल्य निर्धारण के लिए किया गया। उर्वरक पर सब्सिडी देकर उसे सस्ते दाम में किसानों तक पहुंचाया गया। 1970 में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय और 1972 में जीबी पंत कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश की स्थापना की गई। इन विश्वविद्यालयों के माध्यम से कृषि में नवाचार और कृषि प्रौद्योगिकी में विकास हुआ। तीन वार्षिक योजना (1966-69)ई० के अंतिम वर्ष में खाद्यान्न उत्पादन 95.6 मिलियन टन पहुंच गया। पांचवी पंचवर्षीय योजना में हरित क्रांति से वंचित, सूखे क्षेत्र, छोटे किसानों पर ध्यान दिया गया। कृषि के साथ पशुपालन व दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए योजना लाई गई। ट्राइबल एरिया डेवलपमेंट प्रोग्राम

(TADP) के द्वारा आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार एवं उड़ीसा राज्यों के आदिवासियों के लिए योजना बनाई गई। 1974 में न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम (MNP) के द्वारा गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने का प्रयास किया गया।

कृषि अधिशेष की स्थिति में कृषि नीति में परिवर्तन (1980-1990)ई०:-

हरित क्रांति के लिए सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य तो प्रदान किया परंतु अधिशेष उत्पादन को खरीदने में समस्या आने लगी। सरकार ने इसके लिए गोदाम बनवाए, खाद्यान्न का निर्यात भी किया गया परंतु खाद्यान्न के अधिक उत्पादन ने मूल्य घटा दिया। गन्ने की फसल की अत्यधिक उत्पादन ने भुगतान संकट को जन्म दिया। किसानों की वास्तविक आय कम हो गई क्योंकि अब उत्पादन में खर्च ज्यादा किया जाने लगा था। खाद्यान्न फसलों के उत्पादन को कम करने के लिए अन्य कृषि उत्पादों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित किया गया। FCI के माध्यम से सरकार खाद्यान्न फसलों को खरीदती थी इसका भंडारण किया जाता था उसके बाद सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) से खाद्यान्न को गरीबों तक पहुंचाया जाता था। कृषि निर्यात को बढ़ाने के लिए एग्रीकल्चर एंड प्रोसैस्ड फूड प्रोडक्ट एक्सपोर्ट डेवलपमेंट अथॉरिटी (APEDA) की स्थापना 1986 में हुई। तिलहन, दलहन और नगदी फसलों को बढ़ावा दिया गया। 1986 में राष्ट्रीय तिलहन मिशन प्रारंभ हुआ। हरित क्रांति से क्षेत्रीय असमानता में बढ़ोतरी हुई। हरियाणा, पंजाब व पश्चिम उत्तर प्रदेश इससे लाभान्वित हुए परंतु पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार एवं अन्य राज्य पिछड़ गए। पिछड़े राज्यों के द्वारा अलग से कृषि नीति बनाई गई जिसे केंद्र से अनुदान प्राप्त होता था। गेहूं व धान की फसलों के उत्पादन से भूजल स्तर नीचे चला गया। पर्यावरणीय संकट बढ़ गए तथा भूमिगत जल स्तर एवं पर्यावरण सुधार के लिए सरकार को अलग नीति बनानी पड़ी। 1980 में वन संरक्षण अधिनियम, 1986 में पर्यावरण संरक्षण अधिनियम लागू किया गया।

कृषि नीतियों पर वैश्वीकरण का प्रभाव (1991-2000)ई०:-

1991 में हुए वैश्वीकरण उदारीकरण और निजीकरण से कृषि क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा। व्यापार उदारीकरण कृषि में कॉर्पोरेट भागीदारी और वैश्विक मानकों के पालन के दबाव से कृषि क्षेत्र प्रभावित हुआ है।1995 में विश्व व्यापार संगठन (WTO) से देश का एग्रीमेंट ऑन एग्रीकल्चर (AoA) हुआ। इसने कृषि क्षेत्र में टैरिफ, सब्सिडी और बाजार पहुंच से संबंधित प्रावधान तय किया। इसके परिणाम स्वरुप भारत ने मात्रात्मक आयत प्रतिबंध हटाकर टैरिफ प्रणाली अपनाई।WTO से एग्रीमेंट ऑन एग्रीकल्चर समझौते के अनुसार MSP को एम्बर बॉक्स सब्सिडी घोषित करके हानिकारक बताया गया है। इस तरह से सरकार को कृषि नीति बनाने में कृषकों के पक्ष और WTO से समझौते में संतुलन बनाना पड़ रहा है। अपने संतुलित कृषि विकास के उद्देश्य की पूर्ति के लिए भारत सरकार ने जुलाई 2000 में प्रथम कृषि नीति का निर्माण किया

निष्कर्ष एवं विचार विमर्श:-

स्वतंत्रता के बाद भारत में पूंजीवादी व समाजवादी अर्थव्यवस्था का मिश्रित रूप में योजनाओं का निर्माण में उपयोग किया गया। पूंजीवादियों के कारखाने में बने कीटनाशक मशीनों एवं खाद्य ने भारत को खाद्यान्न संकट से निकलकर आत्मनिर्भर बनाया जबकि सार्वजनिक वितरण प्रणाली जमींदारी उन्मूलन इत्यादि योजनाओं ने समाजवादी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया। हरित क्रांति का लाभ कुछ नहीं राज्यों को प्राप्त हुआ बाकी जगह इसका प्रभाव सीमित रहा है। MSP पर खरीद में भी अनियमितता है जिससे किसान अपनी फसल बाजार में कम दाम पर बेचने को मजबूर हो रहे हैं। पंजाब जैसे राज्य को तो लाभ मिल रहा है तुरंत बिहार जैसे राज्य पिछड़ जा रहे हैं क्योंकि उनको आधारभूत सुविधा नहीं मिल पाई है। वर्तमान में भी ज्यादातर सिंचाई नलकूप, तालाबों एवं भूमिगत जल से ही हो रही है जिससे गर्मियों में जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अधिकांश कृषक आज भी मौसम पर ही निर्भर हैं फसल खराब होने पर किसान को मुआवजा बहुत कम मिल पाता है या उसकी प्रक्रिया इतनी जटिल होती है कि किसान मुआवजा ले नहीं पाता। अत्यधिक खाद एवं कीटनाशकों के उपयोग से लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ रहा है भूमि की उर्वरता भी कम हो गई है। बढ़ती जनसंख्या के साथ ही खेती का क्षेत्रफल बढ़ाने के लिए जंगलों की कटाई की जा रही है जिससे पर्यावरण असंतुलित हो गया है, मौसम चक्र भी प्रभावित हो रहा है जो अंततः कृषि उत्पादन को ही प्रभावित करता है। खाद, बीज, बिजली, डीजल एवं मजदूरी के मूल्य बढ़ने के साथ कृषि उत्पादन लागत में वृद्धि हो रही है परंतु उस अनुपात में किसानों को कृषि उत्पाद का मूल्य न मिलने से उनकी वास्तविक आय कम हो गई है। टमाटर, आलू, प्याज एवं हरी सब्जियों का उत्पादन तो हो रहा है परंतु कोल्ड स्टोरेज नहीं होने से किसान को अपनी फसल कम दाम पर बेचने को मजबूर होना पड़ता है अन्यथा वो खराब हो जाएंगी। सरकार को कृषि नीतियां बनाते समय कृषकों की समस्याओं को ध्यान में रखना चाहिए। आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट 2024 25 के अनुसार जीडीपी में लगभग 16% कृषि का योगदान है और पीरियोडिक लेबर सर्वे रिपोर्ट के अनुसार कृषि क्षेत्र अभी रोजगार का सबसे बड़ा क्षेत्र है। 2023-24 में लगभग 46% रोजगार कृषि से संबंधित था। देश का कुल कार्य बल लगभग 56.5 करोड़ है इस तरह से लगभग 26 करोड़ लोगों को रोजगार के लिए कृषि पर निर्भर रहना पड़ता है।[4] किसी भी एक गलत नीतियों से ऐसे 26 करोड लोग प्रभावित हो सकते हैं और किसी सही नीतियों से इनका जीवन स्तर सुधर सकता है।

संदर्भ सूची (Bibliography)

प्राथमिक स्रोत:-

1. Government of India. (2025). Agriculture and food management: Sector of the future (Chapter 9). In Economic Survey 2024–25 (pp. 245–270). Ministry of Finance, Government of India. https://pib.gov.in
2. GOI (1952). Government of India, Planning Commission, First Five Year Plan, New Delhi, 1952,

[4] Economic Survey 2024-25 (pp. 245-270).

3. GOI (1956). Government of India, Planning Commission, Second Five Year Plan, 1956,

4. GOI (1969). Government of India, Four Five Year Plan.

5. GOI (1974). Government of India, Fifth Five year Plan.

6. GOI (1997). Government of India, Nine Five year Plan

द्वितीयक स्रोत:-

Books-

1. Organisation for Economic Co-operation and Development (OECD). (2024). Agricultural policy monitoring and evaluation 2024: India. OECD Publishing. https://data-explorer.oecd.org/

2. बंद्योपाध्याय, एस. (2015). पलासी से विभाजन तक और उसके बाद: आधुनिक भारत का इतिहास (एन. 'नदीम', अनुवाद; दूसरा संस्करण). ओरियंट ब्लैकस्वॉन.

Articles-

1. Tripathi, A., & Prasad, A. R. (2009). Agricultural development in India since independence: A study on progress, performance, and determinants. Journal of Emerging Knowledge on Emerging Markets, 1(1), Article 8. https://doi.org/10.7885/1946-651X.1007

2. Arora, V. P. S. (2013). Agricultural policies in India: Retrospect and prospect. Agricultural Economics Research Review, 26(2), 135–157. https://ageconsearch.umn.edu/record/162068

3. Prabha, P., Kumar, B., Goyal, S. K., Goyal, R. K., & Singh, S. R. (2015). Indian agriculture and rural development under five year plans: An appraisal. Agriways, 3(1), 41–47. Research and Education Development Society (REDS).

4. Nadkami, M. V. (1993). Agricultural policy in India: Context, issues and instruments. Department of Economic Analysis and Policy, Reserve Bank of India.

5. Owens, R. E. (1987). An overview of agricultural policy: Past, present, and future. Federal Reserve Bank of Richmond Economic Review, 73(3), 39–50.

Website

1. https://www.pib.gov.in/newsite/erelcontent.aspx?relid=991